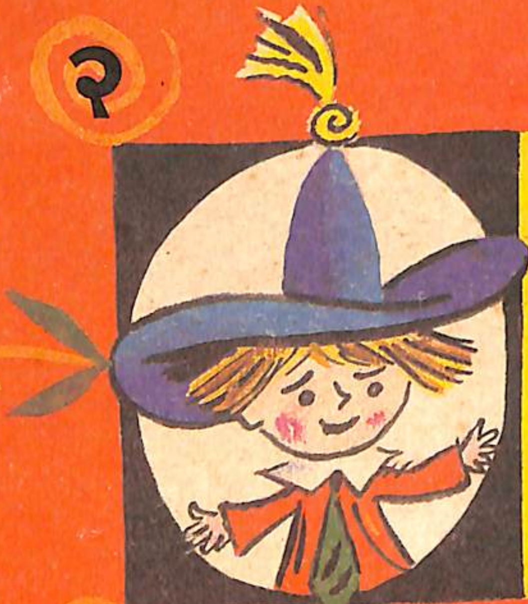
नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

२



नजानू संगीतकार कैसे बना



रादुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव २

नजानू संगीतकार कैसे बना

अनुवादक:
सरस्वती हैदर

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन



राद्गा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-30200।

Н. Носов
КАК НЕЗНАЙКА БЫЛ МУЗЫКАНТОМ
На языке хинди

N. Nosov
DUNNO TAKES MUSIC LESSONS
in Hindi



सोवियत संघ में मुद्रित

© हिन्दी अनुवाद • चित्र • रादुगा प्रकाशन • १९८४



अगर नजानू किसी भी काम को करने का बीड़ा उठाता तो उस काम को वह उस तरह नहीं करता जैसा करना चाहिये। उससे हर काम उलटा-पुलटा होता। उसने सिर्फ़ अक्षर जोड़-जोड़कर पढ़ना सीखा और लिखना वह सिर्फ़ बड़े अक्षरों में ही जानता था। बहुत-से लोग यह कहते कि नजानू की खोपड़ी बिलकुल ख़ाली है मगर यह सच बात नहीं है क्योंकि अगर उसकी खोपड़ी बिलकुल ख़ाली होती तो वह सोचता कैसे? इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह कोई भी बात ठीक से नहीं सोचता था। मगर वह अपने जूते पैरों में ही पहनता था, सर पर नहीं, और यह करने के लिए भी समझ होनी चाहिये।

नजानू वैसे बुरा नहीं था। उसकी बड़ी इच्छा थी कि वह कोई चीज़ सीखे मगर वह काम करने से कतराता था। वह चाहता था कि वह हर चीज़ जल्दी से सीख ले, बिना मेहनत किये। मगर यों तो समझदार से समझदार बौने भी कुछ नहीं सीख सकते।

छुटकों और छुटकियों को संगीत से बड़ा प्रेम था और बाजाबाज़ बहुत ही अच्छा संगीतकार था। उसके पास तरह-तरह के बाजे थे और वह उनको अकसर बजाया करता था। सब लोग उसका संगीत सुनते और उसकी बड़ी प्रशंसा करते। नजानू को इससे बहुत





जलन होती कि सब लोग बाजाबाज़ की इतनी प्रशंसा करते हैं, इसलिए उसने बाजाबाज़ से आग्रह किया :

"मुझे भी बाजे बजाने सिखा दो। मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं संगीतकार बनूं।"

"सिखा दूंगा," बाजाबाज़ तैयार होकर बोला। "तुम कौन-सा बाजा बजाना सीखना चाहते हो?"

"किस बाजे को बजाना सीखना सबसे आसान है?"

"बलालायका को।"
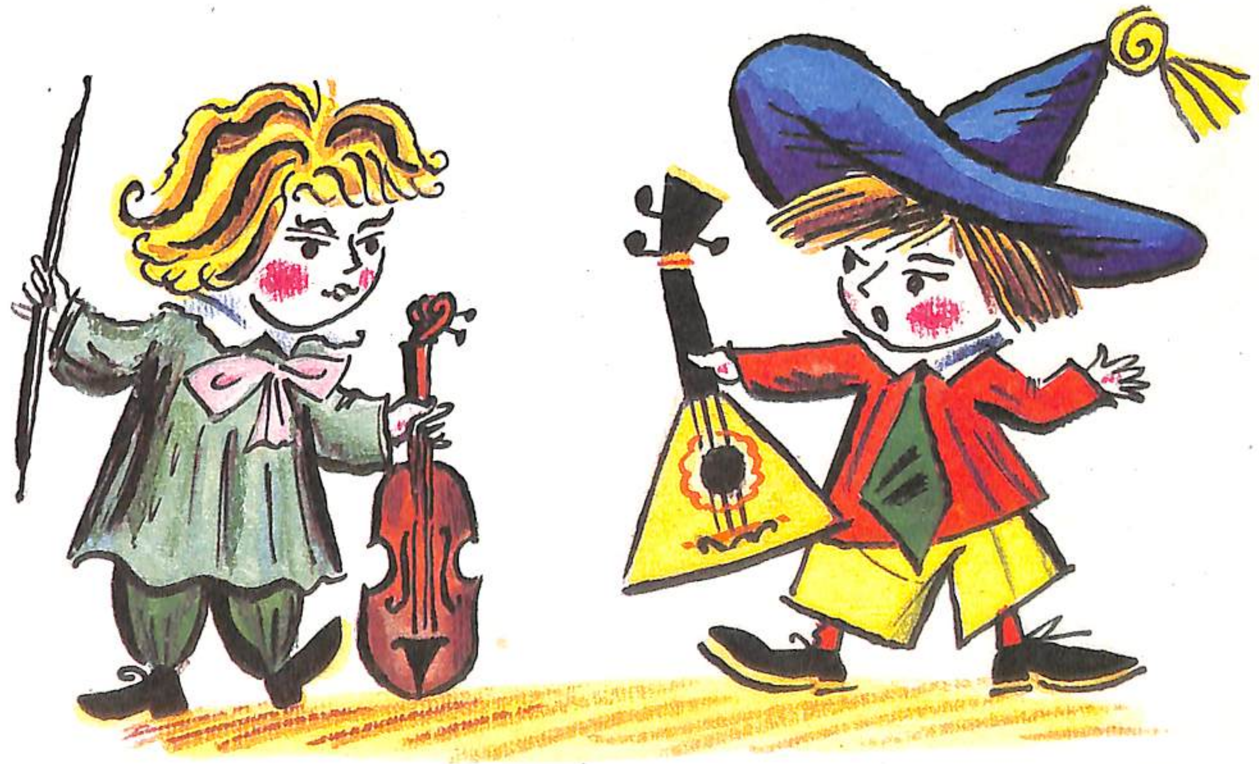






"लाओ तो बलालायका ही मुझे दो। मैं उसे ही बजाने की कोशिश करता हूं।"

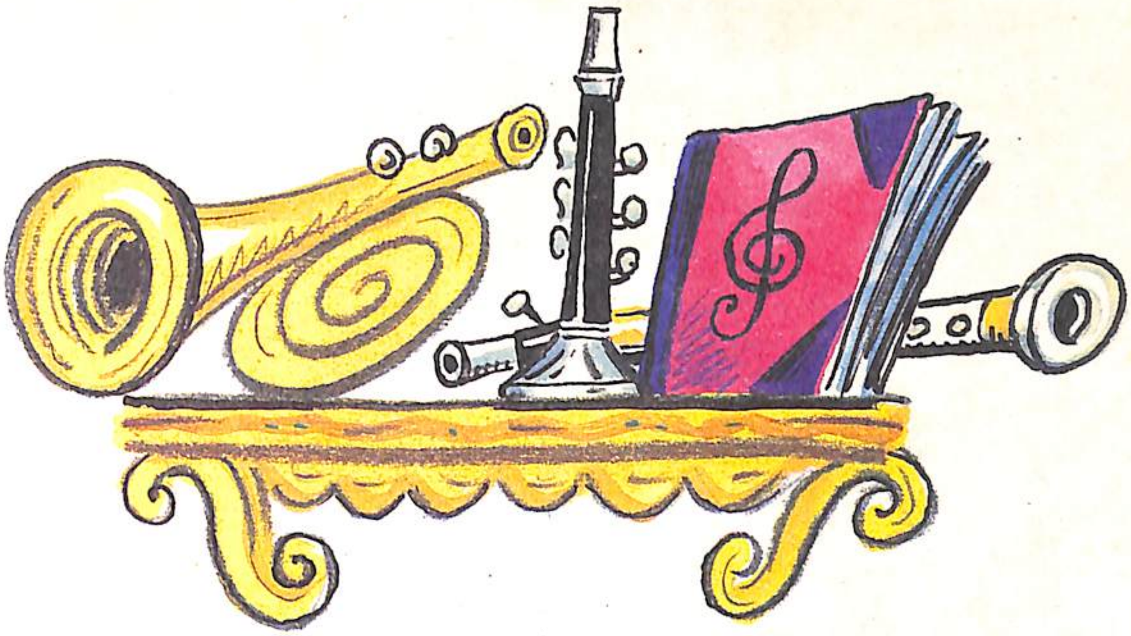
बाजाबाज़ ने नजानू को बलालायका दे दिया। नजानू ने उसके तार झनझनाये और फिर बोला :

"नहीं, बलालायका की आवाज़ तो बहुत हल्की है। मुझे कोई दूसरा ख़ूब ज़ोर से बजनेवाला बाजा दो।"

बाजाबाज़ ने उसे वायोलिन पकड़ा दिया। नजानू ने गज़ से वायोलिन के तारों को छेड़ा और बोला :







"इससे भी ज़्यादा ज़ोर से बजनेवाला कोई दूसरा बाजा नहीं है?"

"बिगुल है," बाजाबाज़ ने जवाब दिया।

"लाओ, वही दो। ज़रा उसको बजाने की कोशिश करता हूं।"

बाजाबाज़ ने नजानू को एक बड़ा-सा पीतल का बिगुल थमा दिया। जब नजानू उसमें फूंकता तो बिगुल में से बड़ी ज़ोर की आवाज़ निकलती।

"यह है अच्छा बाजा," नजानू ने प्रसन्न होकर कहा। "खूब ज़ोर से बजता है।"

"अगर तुम्हें बिगुल ही पसंद है तो तुम इसे ही बजाना सीख लो," बाजाबाज़ ने सहमत होकर कहा।





"मुझे सीखने की क्या आवश्यकता है? मैं तो बिना सीखे ही इसे बजा सकता हूं," नजानू ने जवाब दिया।

"ऐसा नहीं है। तुम अभी बिगुल बजाना नहीं जानते।"

"जानता हूं। ख़ूब बजाना जानता हूं! लो, सुनो!" नजानू ज़ोर से बोला और अपनी पूरी ताक़त से बिगुल में फूंकने लगा:

"बूं-बूं-बूं! टें-टें-टें!"

"तुम तो ख़ाली आवाज़ें निकाल रहे हो, बिगुल नहीं बजा रहे," बाजाबाज़ ने कहा।

"कैसे नहीं बजा रहा हूं?" नजानू ने बुरा मानकर कहा। "मैं तो बहुत अच्छा बजा रहा हूं! बड़े ज़ोर से!"

"ओह, बुद्धू कहीं के! बिगुल बजाने का मतलब यह नहीं है कि उससे ऊंची आवाज़ निकले, बल्कि उसे बजाने का मतलब है कि उससे सुंदर संगीत पैदा हो।"

"मेरे ख़्याल में तो मैं बहुत सुंदर संगीत पैदा कर रहा हूं।"

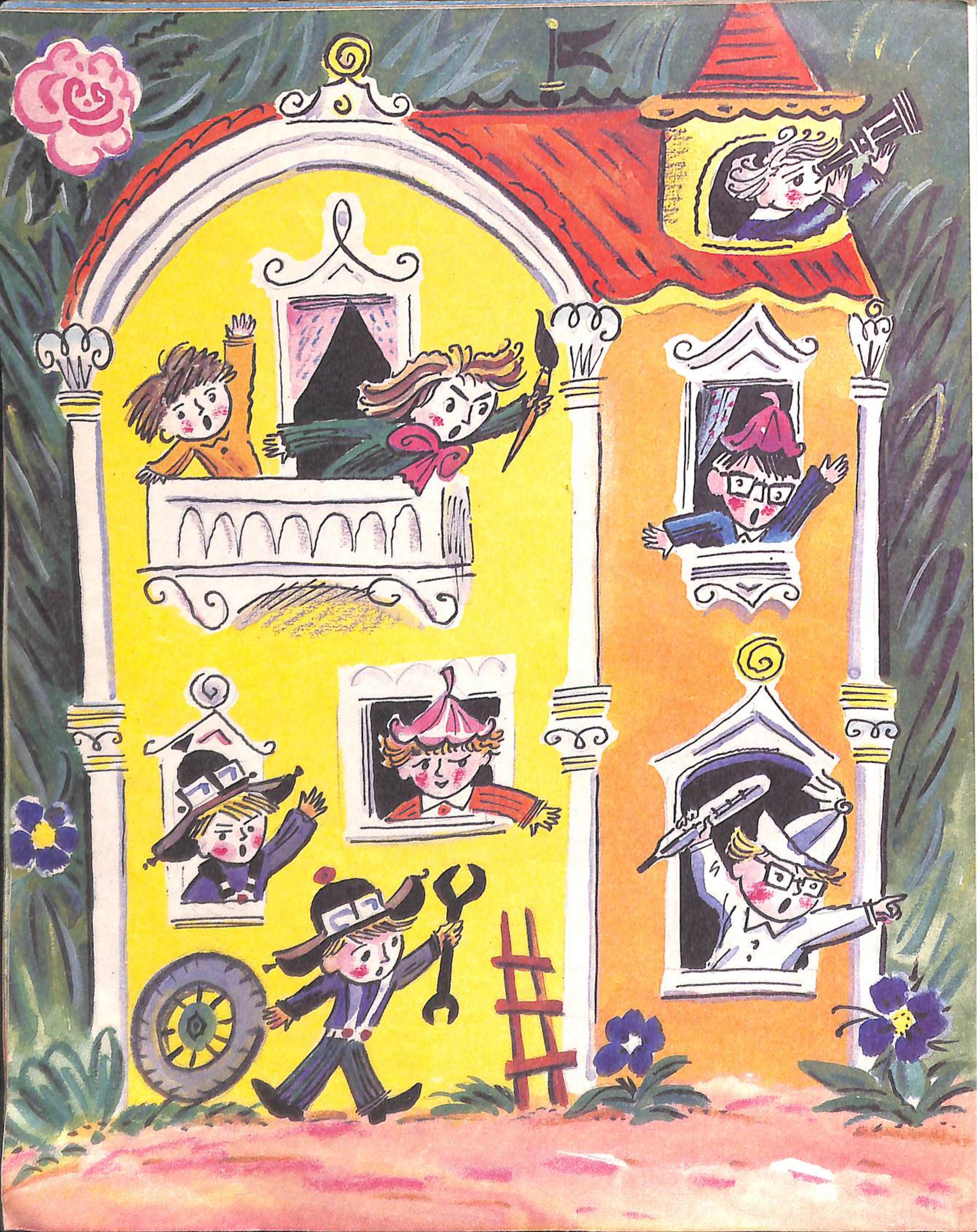
"जैसे तुम बजा रहे हो वह बिलकुल सुरीला नहीं है," बाजाबाज़ ने कहा। "मैं देख रहा हूं कि तुम्हें संगीत की ज़रा भी समझ नहीं है।"

"तुम्हें संगीत की समझ नहीं है," नजानू ने नाराज़ होकर कहा, "तुम मुझसे जलते हो, इसलिए ऐसा कह रहे हो। तुम चाहते हो कि लोग सिर्फ़ तुम्हारा ही संगीत सुनें और तुम्हारी ही प्रशंसा करें।"

"ऐसा कुछ भी नहीं है," बाजाबाज़ बोला। "यह बिगुल तुम अपने साथ ले जाओ और इसको जितना जी चाहे बजाओ, अगर तुम्हारा यही ख़्याल है कि इसको बजाना सीखने की कोई आवश्यकता नहीं है। लोग अगर तुम्हारी प्रशंसा करें तो इससे मुझे क्या।"

"मैं तो बिगुल अवश्य बजाऊंगा," नजानू ने जवाब दिया।





वह बिगुल में ज़ोर से फूंक मारता मगर उसे बिगुल को सही तरीक़े से बजाना बिलकुल नहीं आता था – बिगुल कभी गूंजता, कभी भर्राता, कभी कराहता तो कभी हुंकारता। बाजाबाज़ बहुत देर तक यह सब सुनता रहा और अंत में वह तंग आ गया। उसने अपना मख़मल का कोट पहना, अपने गले में टाई की जगह गुलाबी रंग की बो बांधी और किसी के घर चला गया।

शाम को जब सब छुटके घर में इकट्ठे हुए तब नजानू ने फिर अपना बिगुल उठाया और उसमें फूंकने लगा।

"बूं-बूं-बूं-ऊं। टूं-टूं-टूं-ऊं!"

"यह कैसा शोर है?" सब चिल्लाये।

"यह शोर नहीं है," नजानू ने उत्तर दिया। "मैं तो बिगुल बजा रहा हूं।"

"तुरन्त बन्द करो!" जानू चिल्लाया। "तुम्हारा संगीत सुनकर तो कानों में दर्द होने लगता है।"

"यह इसलिए कि तुम्हें अभी मेरा संगीत सुनने की आदत नहीं पड़ी है। जब आदत हो जायेगी तो कानों में दर्द नहीं होगा।"

"मैं तुम्हारा संगीत सुनने की आदत नहीं डालना चाहता। मुझे क्या पड़ी है!"

मगर नजानू ने जानू की बात नहीं सुनी और बिगुल बजाता ही रहा।

"बूं-बूं-बूं! खरर-खरर-खरर! खर-र-र! बिऊं-बिऊं!"





"बिगुल बजाना बन्द करो!" नजानू पर सब छुटकों ने हमला बोल दिया। "अपने इस रद्दी बिगुल को अपने साथ लेकर यहां से चले जाओ!"

"कहां चला जाऊं?"

"क़िसी मैदान में चले जाओ और वहां जाकर बिगुल बजाओ।"

"मैदान में तो मेरा बिगुल बजाना कोई नहीं सुनेगा।"

"क्या तुम्हारे लिए यह बहुत आवश्यक है कि कोई तुम्हें बिगुल बजाते हुए सुने?"

"अवश्य।"

"तो सड़क पर जाकर बजाओ। वहां से पड़ोसियों को तुम्हारा बिगुल बजाना सुनायी देगा।"

नजानू सड़क पर निकल आया और पासवाले घर के निकट उसने बिगुल बजाना फिर आरम्भ कर दिया, मगर पड़ोसियों ने भी उसे अपनी खिड़कियों के नीचे शोर मचाने से मना किया। तब नजानू दूसरे घर के पास गया, मगर उसको वहां से भी भगा दिया गया। वह तीसरे घर के पास पहुंचा और वहां भी लोगों ने उससे अपना रास्ता लेने के लिए कहा। तब नजानू ने यह फ़ैसला किया कि वह उन सब को चिढ़ाने के लिए बिगुल



बजाता ही रहेगा। पड़ोसियों को उस पर बड़ा गुस्सा आया। वे अपने घर से निकलकर नजानू की ओर लपके। नजानू जान बचाने के लिए अपना बिगुल लेकर वहां से बमुश्किल भाग पाया।

तब से आज तक नजानू ने बिगुल बजाना बन्द कर रखा है।

"मेरा संगीत किसी की समझ में नहीं आता," वह बोला। "अभी तक लोगों का स्तर मेरे संगीत को समझने लायक़ नहीं हुआ। जब ये लोग लायक़ हो जायेंगे तो स्वयं मुझसे बिगुल बजाने को कहेंगे। मगर तब बहुत देर हो चुकी होगी। मैं तब बिगुल नहीं बजाऊंगा।"









ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-002331-9